कम होने पर विवाह सम्बन्धों में कठिनाई होने लगती है जिससे वे समान आचार–विचार वाली जाति के अन्य गोत्रों को अपने में मिला लेती हैं। जैसे वर्तमान में मेवाड़ में रह रही दशोरा जाति में कुल छः ही गोत्र वाले थे जिनमें एक बार लड़कियों की कमी हो गई तथा एक गांव (पालछा) में सीताराम जी के केवल छः कन्याएं थी व लड़का कोई नहीं था जो औटुम्बर ब्राह्मण का परसाई अवटंक का कश्यप गोत्र का था। उसे इस जाति में मिलाकर उसकी छः हों कन्याएं ले ली तथा दशोरों के एक लड़के को उनके गोद रख दिया। इस प्रकार गोत्र परिवर्तन होता रहता है।

19. वर्तमान में इस जाति के कुल 12 गोत्र हैं जिनमें वराही एवं गर्ग गोत्र का कोई नहीं रहा तथा धनंजय, कापिस्टिल एवं कश्यप गोत्र के परिवार नाम मात्र के है जिससे सात गोत्रों में ही कन्या लेन–देन करना पड़ता है जिससे कठिनाई आ रही है। अतः नागरों से पुनः सम्बन्ध स्थापित हो जाय तो अनुचित नहीं है। नागरों को इस विषय में सोचना चाहिए।

20. इस प्रश्नोरा नागरों में एक भ्रान्ति यह भी है कि दशोरा अपने को प्रश्नोरा नागर कहकर अपने गौरव को सिद्ध करना चाहते हैं किन्तु इस दशोरा जाति ने स्वयं ने समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। इस जाति में अच्छे प्रशासनिक अधिकारी हैं, समाजसेवी हैं, स्वतन्त्रता सेनानी है, कवि है लेखक हैं, सहित्यकार हैं, संगीतज्ञ है, इतिहासकार हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त है, ज्योतिषी है, डाक्टर है, वैद्य है, इंजिनियर है, वकील है, बैंक मेनेजर है, वास्तुविद् है, कर्मकाण्डी हैं, तांत्रिक हैं, वेदान्ती हैं, अध्यात्मविद् है, विदेशों में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं, सम्पन्न है, पुरूषार्थी है तथा कई उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। अतः यह जाति स्वयं ही सम्मानित हैं। अन्यों से इसे गौरव प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जाति से कोई उच्च व हीन नहीं होता। अपने ज्ञान व कर्म से ही वह उच्च व हीन होता है। केवल भोजन व्यवहार व कन्या लेन देन अपने ही वर्ग में होने से यह एक भिन्न जाति बन गई अन्यथा यह एक ही ब्राह्मण जाति की एक उपजाति है जिनमें भेद करना किसी भी प्रकार उचित नहीं है।

21. प्रश्नोरा नागरों के भी चार गोत्र – सांख्यायन, दशस, धृतकौशिक तथा माल्याणी भी नागरों की गोत्र सूची में नहीं है अतः ये भी नागर नहीं है। बाद में मिले हैं।

22. श्री दामोदर पंड्या कहते हैं कि नागर गुजरात में ईस्वी की पहली शताब्दी में आये थे। ऐसा इतिहासकार मानते है।

23. श्री पंड्या के अनुसार भार्गव गोत्र वाले धाँगध्रा तथा माण्डव्य गोत्र वाले राजकोट मे निवास करते थे। यहीं से 2 परिवार मेवाड़ में आये थे।